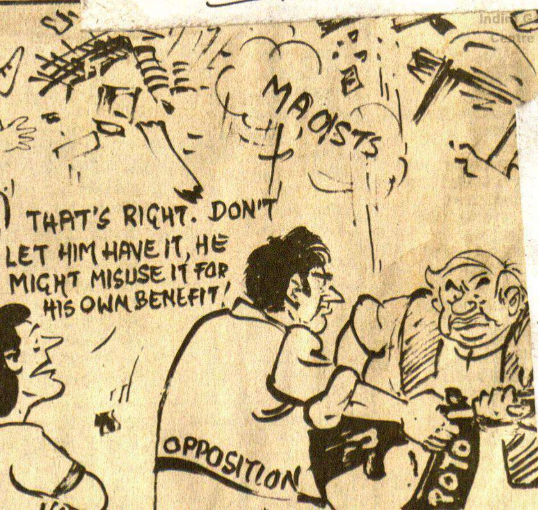
अजीर्ण मञ्जरी by दत्तराम माथुर –
Edited ~~by~~ with commentary in Hindi by Pt. केशवदेव शर्मा – brittle condition, ~~top~~ total pages are tissued, careful handling is needed.
Published by लाला हरप्रसाद at श्रीकाशी समान प्रेस. Lithoprint edn., ~~Benares~~, ~~[illegible]~~ Mathura, n.d.

(15)



(1538)

Bill No. 3/07-08

93

2008 – 0247

अजीर्णमंजरी



श्रीकाशी सुमाननामयंत्रालय में · लाला
हरप्रसाद के प्रबंध से छपी · हस्बफ़रमाय
शलाला देवीदास खत्री ताजर कुतबके ।

अजीर्णमंजरी

पण्डितदत्तराममाथुरकृत



सूचीपत्र

श्री

अजीर्णमंजरी

मू· धन्वंतरिंधृतकरामृतपूर्णकुंभंपी
ताम्बरंसकलसिद्धसुरेन्द्रवंद्यं वंदे
रविन्दनयनंमणिमाल्यमायुर्वेदप
र्वतकमनुस्मृतिरोगनाशम् ॥१॥

टी· धरीहै अमृतका पूर्ण कलश हाथमेंजिन्ने पीताम्ब
रकेधारणकरनेवाले सब सिद्धऔर सुरेन्द्रोंकेवंद्य कम
लसेनेत्र मणिकीमालाको धारणकरनेवाले आयुर्वे
द वैद्यविद्याके प्रगटकरनेवाले तथा स्मरणमात्रसें·
हीं रोगोंकोनाशकरैं ऐसेश्रीधन्वंतर भगवान्को हम·
ग्रन्थकी आदिमें नमस्कारकरतेहैं ॥१॥

मू· राधिकारमणंनत्वाश्रीवृन्दावन·
चारिणं दत्तरामःप्रकुरुतेदिव्या
र्थाजीर्णमंजरीम् ॥२॥

टी· श्रीवृन्दावन विहारी राधिका रमण को नमस्कारक
र दत्तरामश्रेष्ठहै प्रयोजन जिसका ऐसीइसअजीर्णमंज
रीकोरचनाकरीहै ॥२॥

मू· यतस्सर्वेषुरोगेषुत्यजीर्णंकारणंमृ
तं ततस्तस्यनिदानंचकथ्यतेपूर्वसंमतं

टी॰ सबरोगोंकाकारण अजीर्णरोगकहतेहैं क्योंकिजब अन्नकापरिपाक यथार्थनहींहोय तबतक अनेकज्वरादि दुष्टरोगइसमनुष्यकोसंतापितकरकरतेहैं इसीहेतुसेअजीर्णरोगका पूर्वाचार्योंके संमतनिदानकोकहतेहैं अजीर्णरोगहोनेकाकारण मंदाग्निहै मंदाग्निकेहोनेमेहीअजीर्णरोगहोयहै ॥३॥

अजीर्णरोगकीउत्पत्ति

मू॰ अत्यंबुपानाद्विषमाशनाच्च संधार
णात्स्वप्नविपर्ययाच्च कालेपिसा
त्म्यंलघुचापिभुक्तमन्नंनपाकंभज
जेमनुस्य ॥४॥

टी॰ बहुतजलपीनेसें कुसमयभोजनकरनेसें मलमूत्र आदिवेगकेरोकनेसें दिनकेसोनेसें रात्रीमेंजागनेसें अथवा भोजनकेसमय निरंतरलघुभोजनकरनेसें येसेमनुष्यके अच्छीरीतिसें अन्ननहींपचैहै ॥४॥

मू॰ ईर्ष्याभयक्रोधपरिप्लुतेनलुब्धेन
शुगदैन्यनिपीडनेन प्रद्वेषयुक्तेन
चसेव्यमानमन्नंनसम्यक परिपा॰
कमेति ॥५॥

टी॰ ईर्ष्या॰भय॰क्रोध॰इनकेअष्टप्रहरकरनेसें लोभ॰शोक दीनताइनकेकरनेसें तथाअष्टप्रहरवैरकेराखनेसें भक्ष्य

केभोजनकराअन्नअच्छीरीतिसेंनहींपचैहे ॥५॥

मू॰ भुक्त्वान्नंपाचितंनैवबन्हिनोदरजेन
तत् तस्योपरिपुनर्भुक्तमजीर्णंतंवि
दुर्बुधाः ॥६॥

टी॰ मंदाग्निसेंप्रथमभोजनकराअन्नतोपरिपाकभया
नहोयतउस्केऊपरफेरभोजनकरैउसेअजीर्णरोगकहतेहैं

अजीर्णके भेद॰ ॥

मू॰ आमंविदग्धंविष्टब्धंकफपित्ता
निलैस्त्रिभिः अजीर्णंकेचिदिच्छं
तिचतुर्थंरसशेषतः ॥७॥ अजीर्णं
पंचमंकेचिन्निर्दोषंदिनपाकिच।
वदंतिषष्ठंचाजीर्णंप्राकृतंप्रतिवा
सरम् ॥८॥

टी कफपित्तऔरवायु येतीनदोषोंसेक्रमपूर्वकआ
मविदग्ध और विष्टब्ध ऐसेतीनप्रकारका अजीर्णहो
यहै औरकोईआचारीकहतेहैंकिआहाररसकेसेषर
हनेसेचतुर्थअजीर्णहोयहै औरत्रिदिनमेंजोआहार
पचैउसकोनिर्दोषपांचमाअजीर्णकहतेहैं औरजोनित्य
रहैउसकोप्राकृतअजीर्णछटाकहतेहैं ऐसेअजीर्णरोग
छःप्रकारकाहै ॥८॥ परंतुमुख्यअजीर्णरोगचारहीप्रकार
काहै सोग्रंथान्तरमें लिखाहै ॥ यथा ॥

मू. अजीर्णप्रभवारोगास्तदजीर्णंचतु
विधम् आमंविदग्धंविष्टब्धंरसाजी
र्णंचतुर्थकम् ॥ ९ ॥

टी. मनुष्योंके अजीर्णहोनेसें रोगप्रगटहोतेहैं सोअ
जीर्णरोगचारप्रकारकेहैं आम. विदग्ध. विष्टब्ध. रसाजी
र्ण. ऐसेचारप्रकारकाहै ॥ ९ ॥

आमादिकअजीर्ण के लक्षण. ॥

मू. तत्रामेगुरुतोत्क्लेदः शोथोगंडाक्षि
कूटगः उद्गारश्चयथाभुक्तमविद
ग्धःप्रवर्तते ॥ १० ॥

टी. तिनमें आमाजीर्णमें देहकाजड़होना. क्लेद. गाल
औरनेत्र. इनमें सूजन. डकारकाआना. औरजैसाअन्न
खायथैसा ही दस्त मार्गहोकरनिकलनेसें आमाजी
र्ण कहतेहैं ॥ १० ॥

विदग्धाजीर्णकेलक्षण.

मू. विदग्धेभ्रमतृणमूर्छाः पित्ताचवि
विधारुजः उद्गारश्चसधूमाम्लःस्वे
दोदाहश्चजायते ॥ ११ ॥

टी. विदग्धअजीर्णमेंभ्रम. प्यास. औरमूर्छा येहोतेहै.
और पित्तसें अनेकप्रकारकेरोगप्रगटहो सधूमखट्टीडका

रआवे पसीनाआवे तृषादाहहोय ॥११॥

विष्टब्धाजीर्णकेल.

मू. विष्टब्धेशूलमाध्मानंविविधावात
वेदनाः मलवातप्रवृत्तिश्वस्तंभो.
मोहोंऽगपीडनम् ॥१२॥

टी. विष्टब्धअजीर्णमेंशूल.पेटकाफूलना.अनेकवात
सेपीडामलऔरअधोवायुकीअप्रवृत्तिकहियेवंदहो.
जाना देहकाजकड़जाना मोहऔरअंगोंमेंपीडा येल.
क्षणहोतेहैं ॥१२॥

रसाजीर्णकेलक्षण

मू. रसशेषेऽन्नविद्वेषोहृदयाशुद्धि.
गौरवौ

टी. रसशेषअजीर्णमें अन्नमेंअरुचि. हृदयमेंभृष्टता
औरशरीरकाजडहोजाना यहलक्षणहोतेहैं ॥१०॥

चारोंअजीर्णमेंसामा न्यउपचार

मू. आमेचोष्णोदकंपेयंदग्धेचोदर
स्वेदनम् विष्टब्धेरेचनंचैवशय
नंरसशेषके ॥१३॥

टी. आमाजीर्णमेंतप्तजलपीवे विदग्धाजीर्णमेंस्वे
दनकरै विष्टब्धाजीर्णमेंदस्तलेना.औररसशेषअजीर्णमें

शयनकर्नीचाहिये ॥१३॥

अजीर्णपाचनहोनेके दिवस

मू. घृताजीर्णे दिनाः पंच तैले द्वादश
कल्पया तिथिसंख्यापयस्युक्ता
दध्निवाविंशतिस्मृता ॥१४॥

टी. घृतकाअजीर्णपांचदिनमें पचताहै तेलकाबारह
दिनमें दूधकापंद्रहदिनमें दहीबीसदिनमें पचताहै ॥

मू. आमान्यं सप्तरात्रेण दधिषोडश
भिस्तथा क्षीरंविंशतिभिर्ज्ञेयं मांसं
मासेनपच्यते ॥१५॥

टी. आमाजीर्णसातरातमें दहीसोलहदिमें दूधवी
सदिनमें मांसएकमहीनेमेंपचताहै ॥१५॥

मू. उष्णोदकंघृताजीर्णे तैलाजीर्णे च
कांजिकं गोधूमेकर्कटीश्रेष्ठाकद
ल्याम्रफले घृतम् ॥१६॥

टी. घृतकेअजीर्णमेंगरमजलपीनाहितहै तेलके
अजीर्णमेंकांजीपीवै गेहूंकेअजीर्णमेंककड़ीखायऔ
रकेलातथाआमके अजीर्णमें घृतपानकरै ॥१६॥

मू. नालीकेरफलेयुतंदुलजलंक्षीरं र
साले हितं जंबीरेस्यरमेघृतेसमु

चित्तःसर्पिस्तुमोचाफले गोधूमेषु
चकर्कटीहितत मामांसादनेकां
जिकं नारंगेगुडभक्षणंचकपित्थं
पिंडालुकेकोद्रवम् ॥१७॥

टी॰ नारियलगिरीखानेसेंप्रगटअजीर्णमेंचुडुषांमलो
काधोयाजलपानकरनाहितहै॰ आमकेचूसनेसेंप्रगटअ
जीर्णमेंदूधपानकरै॰ घृतकेअजीर्णमेंजंभीरीकारसपीवे
केलाकेफलकेअजीर्णमेंघृतपानकरै॰ गेहूंकेअजीर्णमें
ककड़ीपथ्यहै॰ मांसभक्षणअजीर्णमेंकांजीकापानकरै॰ ना
रंगीकेअजीर्णमेंगुडखानाचाहिये॰ आलूकेअजीर्णमें
कोदोंअन्नभक्षणकरनाचाहिये ॥१७॥

मू॰ पिष्टान्नेसलिलंप्रियालफलजेप॰
थ्याहितामासजे खंडंक्षीरभवेतु
तक्रमुचितंकोष्टपांवुकालिंगजे म
त्स्येचूतफलंत्वजीर्णसमनंमध्वंवु
पानात्यये तैलेपुष्करजेकटुप्रशम
नंशेषांस्तुवुध्वाजयेत् ॥१९॥

टी॰ पिष्टान्नअर्थात्रोटीपूरीकेअजीर्णमेंजलकापीना
हितहै॰ खिरनीकेअजीर्णमेंहरड़खानाचाहिये॰ उरदकेअ
जीर्णमेंखांड़हितहै॰ दूधकेअजीर्णमेंछांछपीनाहितहै॰
तरबूजकेअजीर्णमेंतप्ताजलपीनाचाहिये॰ मछलीकेअ

जीर्णमेंआम्रकोचूसनाचाहिये मद्यकेअजीर्णमेंसन्नुपु
ष्पजलपानकरनाचाहिये कमलबीजखानेकेअजीर्णमें
सरसोंकातेलपानकरनाचाहिये औरशेषअजीर्णोंकोवै
द्य अपनीबुद्धिसेंदूरकरे ॥१८॥

मू॰ पनसेकदलंकदलेचघृतंघृतपाक
विधावपिजंभरसः तदुपद्रवशां॰
तिकरंलवणंलवणेपिचतंदुल
वारिपुरम् ॥१९॥

टी॰ केलाकेअजीर्णमेंकेलाकीगहरखानाअच्छाहे
केलाकीगहरकेअजीर्णमेंघीखाना॰ घृतकेअजीर्णमेंजंभी
रीकारस॰ जंभीरीरसाजीर्णमेंनोन॰ नोंनकेअजीर्णमेंसुद्ध
चांवलोंकाधोवनकाजलपीनाचाहिये ॥१९॥

मू॰ नारिकेलफलतालमूलयोःपाचनं
यद्दहतंदुलंविदुःतेवदंतिमुनयो॰
प्यतंदुलान्क्षीरवारिपरिपाचयन्त्यपि

टी॰ नारिपलकीगिरीखानेकेअजीर्णमें तथातालफलमू
लीहनकेअजीर्णमेंचांवलोंकाधोवनपीनाहितहे औरचां
वलोंकेअजीर्णमेंदूधऔर पानीपीनाश्रेष्ठहे ॥२०॥

मू॰ दाडिमामलकतालनिंदुकीबीजपूर
जवलीफलानिच वाकुलंफलमती
वयाघपेसाकमेतिवकुलंखमूलतः २१

टी· अनार आमले तालफल तिंदुकीविजोरा इमली इनके अजीर्णमें मौलसरीकेफलखानेचाहिये मौलसरी के अजीर्णमें मौलसरीकेजड़कोखानेसेपाचनहोयहै ॥२१॥

मू· माधूकमालूरनृपादपानां परूषखर्जू
रकपित्थकानां पाकायपेयंपिचुमंद
वीजंसिद्धार्थकोहंतिचवीजपूरं ॥२२॥

टी· महुआ वेलफल खिरनी खजूर फालसे इनकेअ
जीर्णमेंनीमकेवीजकोजलमेंपीसकेपीनाचाहिये औरवि
जौरेकेअजीर्णकों सरसोंनाशकरै ॥२२॥

मू· आम्रातकोदुंवरिपिप्पलीनांफलानि
चप्लक्षवटादिकानां विश्वौषधंप
युपितोदकेनसौवर्चलेनाम्रफल·
स्यपाकम् ॥२३॥

टी· गूलर पीपर आम पाकर वड़ इनके फलखानेके·
अजीर्णमें वासेपानीमेंसोठपीसकेपीनायोग्यहै औरआ
मका अजीर्ण संधालोणसेंनाशहोताहै ॥२३॥

मू· मृणालखर्जूरकहारद्राक्षकसेरुश्रृंगा
टकसर्कराणां पथ्याविपाकायचम
दमुस्तंरसोनेपुचभद्रमुस्तकम् ॥२४॥

टी· कमलमूल अर्थात् भसेंडा खजूर मुनक्का कसेरू सिं
घाड़े खांड इनसवकाअजीर्णनागरमोथानाशकरैहैऔर

रलहसनकाअजीर्णदूधपीनेसेनाशहोय ॥२४॥

मू. गोधूममाषौहरिमंथमुद्गौयवांसती
नांकिलवोनिहंति यम्मातुलुंगीफ
लमेतिपाकंक्षरोनमोयंलवणानु
॥ भाव: ॥२५॥

टी. गेहूं उडद चना मूंग जौ मटर इनका अजीर्णधु
तूरेकेरससे नाशहोताहै औरविजौरेका अजीर्णसेंधेनोनसे
नाशहोताहै ॥२५॥

मू. सौवीरंफलमुष्णवारिहन्यात्प्राची
नामलकंचराजिकेका खर्जूरंचप
रूषकंप्रियालंतैलंतालफलेपचे
न्मरीचम् ॥२६॥

टी. बेरकेअजीर्णकोउष्णजलनाशकरै पाचीनआ
मलेकेअजीर्णकोराईदूरकरै छुहाराऔरफालसेकेअजी
र्णको तथाखिरनीकेअजीर्णकोतेलखानाहितहै ताल
फलकेअजीर्णको मिर्चदूरकरैहै ॥२६॥

मू. नागरंहरतिबिल्वजांबवंपाचयेन
मधुरिकाकपित्थजं सर्वथैवमक
लामपहंचीर्पातयेग्निजननीगदि
ता ॥२७॥

टी. बेलफलजामनकेअजीर्णकोसोंठपचातीहै कैथ

के अजीर्णकोसोंफ पाचनकरैहै यहविशेषकरकेसर्व व्याधीनाशकरै अग्निदीप्तकरै ऐसीकहीहै ॥२७॥

मू· पनसाम्लकीफलपक्वयेभजतस र्जनरोग्यबीजकं सकलमय्युदितं तुदिनंफलंप्रपचतिप्रसृतंकपिक च्छुजम् ॥२८॥

टी· कटहर आमले इनके अजीर्णमेंमजेतरुकेबी जभक्षणकरै औरकिसीफलका अजीर्णहो तसमेंको छकेबीजखानाहितहै ॥२८॥

मू· पिसितपनशयोःस्यादाम्रबीजेन पाकः कृशरमहिषयोर्यत्क्षीर योसैंधवेनचिपिटपरिणतिःस्या तपिप्पलीदीप्यकाभ्या मपहरति तुषांबुर्हृद्दलानां मजीर्णं ॥२९॥

टी· मांसऔर कटहलका अजीर्णआमकीगुठलीसें नाशहोय उड़द तिल चामल इनकेमिलानेक्रृशरअर्था त् खिचड़ीहोतीहै औरभैंसकादूधइनदोनोंकापरिपा क सेंधेनोनसेंहोताहै औरचिरवाकाअजीर्णपीपरऔ रअजवायनसेंनाशहोताहै तथादोदलकाअन्नजैसें मूंगउड़दआदिकाअजीर्णकांजीसेनष्टहोय ॥२९॥

मू कर्पूरपूगीफलनागवल्लीकाश्मीर

जातिफलजातिकोशं कस्तूरिका
शेलुकनालिकेरफलं पचत्याशुम
सुद्रफेन ॥३०॥

टी॰ कपूर सुपारी तांबूल केशर जायफल जाविची
कस्तूरी बहेड़ा नारियल इनका अजीर्ण समुद्रफेन पचाते हैं

मू॰ श्यामाकनीवारकुलत्थषष्टीनिष्पा
वकंगुदधिमंडकस्तु चिंचाकुल
त्थौ तिलतैलयोगो जठाब्दनादस्स
निहंत्यपामम् ॥३१॥

टी॰ सामखिया तिन्नी कुलथी साठीचामल वनमूंग
कांगनी इनका अजीर्ण दही के मठा सें नाश होता है इमली
कुलथी इनका अजीर्ण तिल के तेल से दूर होय आम
का अजीर्ण चौलाई की जड़ से नष्ट होय है ॥३१॥

मू॰ कसेरुशृंगाटमृनालमृद्वीखर्जूर
खंडात्यपि नागरेण पलाशभस्मां
बुतथा रजोवारमोनिहंन्यादुरसमि
क्षुजातम् ॥३२॥

टी॰ कसेरु सिघाड़े कमलकाकंद दाख खजूर खांड़
इनका अजीर्ण सोंठ सें नाश होता है पोंडा गंडा का अजी
र्ण ढाक भस्म को पानी में मिला कर पीने से शांति होता है ३२

मू॰ निम्बूफलेनाप्यपपोमरोन कोस्मां

वृन्ताकवातघ्नतमेतिपाकम् तिला
दितैलान्यपिकांजिकेनसंजस्यम
न्नापनसामलकैः ॥३३॥

टी॰ घृतका अजीर्णनीवू अथवा मिरच अथवा गर
मशीतलजलसें पचेहै · तिलसे आदिलेसवतेलोका अ
जीर्णकांजीसे पचताहै कटहर और आमलेका अजीर्ण
मं खुश्वासे पचताहै ॥३३॥

मू॰ किमत्रचित्रंबहुमांसमत्स्यभोजी
सुखीस्यात्परिपीतमद्यः इत्यद्भुतं
केवलवन्हिपक्वमांसेनमत्स्यःपरि
पाकमेति ॥३४॥

टी॰ बहुतमांस और बहुत मच्छी खानेवालापुरुषम
द्यपानकरनेसें सुखीहोपयह आश्चर्य्यनहीहै परंतुके
वल आंचमेंपकामांस अर्थात कबाबमें मछलीका अ
जीर्णपचाताहै यह बड़ा आश्चर्य्यहै ॥३४॥

मू॰ कपोतपारावततित्तिरलावकंठकपिंज
लानांपिशितानिजग्ध्वा कासस्य
मूलंपरिपीयपिष्टसुखीभवेन्नोव
हुशोनुःभूतम ॥३५॥

टी॰ कबूतर और घरका कबूतर मोरसुपेदतीतरइनके
मांसखानेसें प्रगट अजीर्णमें कासकीजड़ कोजलमेंपीस

कर पीनेसें दूर होताहै यह प्रयोग हमारा अनुभूतहै अ
र्थात अजमायाहै ॥३५॥

मू. ओषैरसाल्लासुरभीपयस्तुमंडेन
कोष्णेनविपाकमेति शंखस्यच
र्णेनदध्यादिनारीपयोदधिक्षिप्र
मुपैतिपाकं ॥३६॥

टी. मिस्त्रिरणकाअजीर्ण त्रिकुटा (सोंठ·मिरच·पीपल)
सें पचताहै और गौकेदूधका अजीर्ण चौदहगुणेजल·
युक्त मंड शीतल और गरमसें पचताहै भातके पानीको
मंड कहतेहैं तथा खुरवाले घोड़ासें आदिलेसब पशुन्कादू
ध और दहीका अजीर्ण शंखचूर्णसेपचताहै ॥३६॥

मू. वटोवेमवाराह्ववंगेन फेनीसमंपर्प
ट: शिग्रुबीजेनयाति कणामूल·
तोल्लडूकापूपशाह्वा विपाकोभवेच्छ
ष्कुली मंडयोग्य ॥३७॥

टी. उड़द मूंगकी पकौड़ी घृतमें अथवा तेलमें बनीहो
य सो भक्ष्य विशेष सें परिपाक होय फेंनी लौंगसें पचै पापड़
सहजनेके बीजसें पचै लड्डू पूआ छांछ आदिसैं बनी कढ़ी
आदि समस्तका अजीर्ण और पूरीमाड़ा इत्यादिकका अ
जीर्ण पीपरामूलके खानेसे नाश होताहै ॥३७॥

मू. ष्वाविद्गोधाशाह्लकी चित्तलाद्यास्त्रा

विष्कीरानूकोलकूर्मादयोपिजी
र्यंत्येवंपायसोसुलक्षयपास्माससुद्गाद
ध्यारनालंसुखाय ॥३८॥

टी॰ पंचनखवालेजानवरोंकामांस जैसें गोह सेह क
छुआरराजप्रकार कछुआमछलीमे आदिलेइनकेमांस
काअजीर्ण मेढकेदूधसेपचताहै औरखीर मंगकायूष
पीनसे पचतीहै औरसिरकेका अजीर्ण समुद्रनोनखा
नेसेदूरहोताहै ॥३८॥

मू॰ तप्तंतप्तंहेमवातारमग्नौवारंवारं
सिप्तंमंभस्सुलक्षुपीत्वावक्ष्यंदीर्घ
कालोपपक्वमंभोजीर्णशीघ्रमेवंज
हाति ॥३९॥

टी॰ सुवर्ण अथवा चांदीकोवारंवारतपाकरजलमेंबु
भावेंजसजलकेपीनसेंवहुकालकाजलछुतअजीर्णशांति

मू॰ पालंक्किकाकेचुककारवल्लीवाल्लाक
वंशांकुरमूलकानां जपादिकालं
वुपटोलकानांसिद्धार्थकोमेघरव
स्यपक्तेः ॥४०॥

टी॰ पालक छुचाक जिस्कोवालकस्यापकछ्वीकहते
हैंकरेलावैंगनवांसकेकोपलमूली पोईकासाग मीठीतु
म्बीपरवलचौराईइनसबकाअजीर्णमरसोंकेसागखाने

सैं नष्टहोय ॥४०॥

मू॰ सुंठीसतीनस्यचनागरंगजंबीरयोः
कोद्रवको निहंता ज्वरणसिरागैरकच
न्दनाभ्याम् मभ्येतिपाकं वहुशोनु
भतम् ॥४१॥

टी॰ मटरका अजीर्णसोंठसैंनष्टहोय॰ जंभीरीनीवू॰
नारंगीइनदोनोंकाअजीर्ण कोदोंअन्नसैं पचै येह
मारानिश्चैकराभयाहै ॥४१॥

मू॰ पटोलवंशांकुरुकारवल्लीपलान्यतां
वूनिवहनिजग्ध्वा क्षारोदकं वह्न
तरोर्निपीयभोक्तुपुनर्वांछति ताव
देव ॥४२॥

टी॰ परवल॰ बांसकेकोंपल॰ भीडीतवी॰ इनकेअजीर्ण
मैं पलास (ढाक) केक्षारकोजलमेंपीनेमैंततकालपरि॰
पाकहोय और त्रसीवक्ल तसानाहीं भोजनकरनेकाइ
च्छाहोय ॥४२॥

मू॰ विपच्यतेशरणाकोगुडेनतयालु
कंतंदुलतोयपानात् जंबीरनीरे
णानिशारसोनंसुस्तेनचर्णपरिपा
कमेति ॥४३॥

टी॰ जिमीकंदकाअजीर्णगुड़मेंपचै आलकाअजीर्ण॰

चावलोंके धोवनमैं पचै हलदीका अजीर्ण जंभीरीके रस सैं पचै लहसनका अजीर्ण भोषाके चूर्णसैं परिपाक होय॥

मू॰ चंचूकसिद्धार्थकवालुकानांगायत्रिसारक्वथितेनपाकः प्राकानिसर्वाण्युपयांतिपाकंक्षारेणसद्यस्तिलनालजेन॥४४॥

टी॰ चूका सरसों बथुआ इनके खानेसैं प्रगट अजीर्ण खैरसारके काढेसैं परिपाक होय और सब साग मात्र अजीर्ण तिलके खारसैं नाश होय॥४४॥

मू॰ स्नेहाजीर्णरोगिणांमुद्गचूर्णंज्वालाशक्तोहंतिवैरोचिकानां माषारण्डानिनिम्बमूलेनपाकंचिंचामुंचत्यक्षतांचूर्णयोगात्॥४५॥

टी॰ स्नेह कहिये तैल घृत वसा मुज्जा इनका अजीर्ण मूंगके चूर्णसैं पचता है विरेचक द्रव्य खानेका अजीर्ण सिरकासैं पचता है उरदका अजीर्ण नीबूसैं पचै इम्लीको बहर के खारमें मिलानेसैं खटाईका नाश होय और पचै॥४४॥

मू॰ उष्णेनशीतंशिशिरेणचोष्णमम्लेनचक्षारगणोगुणाय स्नेहेनतीक्ष्णां वमनातियोगेसितांहितास्यादितिकाश्यपोक्तिः॥४५॥

टी॰ सरदीकेरोग गरमऔषधसैंनष्टहोय औरगरमीके
रोगसरदऔषधसैंनष्टहोय सबखारखट्टीवस्तुसैंगुराका
रकहोय सीखीमिरचआदिवस्तुघृततेलआदिसैंगुराकौर
औरवमनकारकऔषधकाऔगुनमिश्रीसैंशांतिहोय॥४५॥

मू॰ ताम्बूलमध्यस्थितचूर्णकेनसंदग्ध
तैयस्यमुखंनरस्य तैलेनवाकेवल
कांजिकेनमुखायगंडूषमसौविद
ध्यात्॥४६॥

टी॰ जिसमनुष्यकामुखपानकेबीड़ा खानेसैं पजरनेल॰
गजाय अर्थातचूनेकसैथेसैंफटे वहतेलअथवासिरकासैं
कुल्लाकरैतौ आरामहोय॥४६॥

मू॰ शीतोदकंनस्यजरोगहानिर्नारीपय
श्वांजनरुग्विनाशि राल्लोदकंधूम॰
गदेप्रशस्तंधात्रीविलेपोतिविरेच
नोत्थे॥४७॥

टी॰ संघनेकेरोग शीतलजलसैंनष्टहोय औरअंजन॰
सेपगदरोगस्त्रीकेदूधसैंनष्टहोय धूम्रपानअर्थातहुक्का
पीने केरोगरालकेजलसैंनष्टहोय औरअतिदस्तोंका॰
रोगआमरेकेलेपसैंनष्टहोय॥४७॥

मू॰ मृगस्यमांसंश्रमजेनुकूलंप्रवात
सुप्तिःसुरतापशमानेक्षीरापयशा सैंध॰

बमाधितं तु छागांड भुक्तं सुरतातिरेके ॥४८॥

टी॰ डंडकसरतकेकरनेसें प्रगटजोज्वरादिकसो मृगकेमांसखानेसें नष्टहोय स्त्रीसंगकेपिछाडीहवादारस्थानमेंसोनाअच्छाहै तथा स्त्रीसंगअधिककराहोय॰ तुससें प्रगटरोगमें जवाखार॰ पीपर॰ सेंधानोंन॰ इन्कोमिलाकर पकाइआषकराअंडकोशखानाहितहै॥

मू॰ अवणपूरणाजेतिलतैलतः अवणापूरणमेवसुखंविदुः कवल॰ जेषुगदेअथकारयेत्कवलमा द्रकजद्रवजंपुनः ॥४९॥

टी॰ कानमेंतेलादिकडारनेसेंप्रगटरोगफेरदूसरेतेलडारनेसेंशांतिहोय और ग्रास अर्थात् गस्साखानेकेरोगफेरअदरकरससुनग्रासखानेसेंनष्टहोय॥४९॥

मू॰ एर्वारुचीनकर्कधोःफलानिकूष्मांडकं सत्रपुसीफलंच निहन्तिसद्योहिकरंजवीजरसंतथावारुणीमेकमूलम् ॥५०॥

टी॰ ककडी॰ चेना॰ आरुक॰ जिस्को पहाडूलोगवीरसेनकहतेहैं पेठा॰ खीरा॰ इनकाअजीर्णकरंजाकेवीजकेस्वरससेंअथवावरनाकीजड़ यहएकहीपूर्वोक्तअजीर्ण

कानाशक रै है ॥५०॥

मू· स्त्रीकेशाम्बुनिपीतमाशु हन्मात्·
प्राचीनामलकंसपाशिमदेम् ॥
शुंठीधान्यकवारिहंतिसद्य स्तोला
नामविकासजान्विकारान् ॥५१॥

टी· आमरा और करौंदा इनदोनोंका अजीर्णस्त्रीके केशधोवनजलपीनेसें शांतिहोय औरआमकारोगसों ठऔरधनियांकेकाढेसें नष्टहोय ॥५१॥

मू· मदयतिनहिमद्यंजातुचेत्सीतम
द्यः पिवतिघृतसमेतांशर्करामेव
सद्यः अथघनमधुकैलाकुष्टदा
वैलवालुप्रकटिकवलास्येमद्यग
धोऽपिनस्यात् ॥५२॥

टी· जोमनुष्यदारूपीवै औरउसकोऊपरमिश्रीमिला घृतपानकरैतोमद्यअर्थातदारूकाअमलनहींचढै औरनागरमोथामुलहठीइलायचीकूटदेवदारूसुगंधवाली इन्काचूर्णमुखमेंराखनेंसेंमुखमेंमद्यकीदुरगंधनहींआवै॥

मू· कूष्मांडकस्यस्वरसोगुडेनपीतंमदं
कोद्रवजंनिहंति पयोनिपीतंसि
तयासमेतमुत्पन्नमृत्युलमधाकरोति

टी· कोदोअन्नकामदगुडऔरपेठेकास्वरसपीनेसैंअं

तिहोय और तथा तुक्षीणकार्श्यादिक रोगदूध में मिश्रीमि-
लायकर पीनेसें दूर होताहै ॥५५॥

मू. घ्रात्वा शुक्तांशीं विपिनोपलंबा संप्रा
प्य किंचित् पटुशर्करां वा शीताम्बु
पीत्वा चुल्लकेन वापि भ्रमस पूगीफ
लमुन्नहाति ॥५६॥

टी. सुपारीका उन्माम शुक्तनेवीअर्थात् नवीके संघनेसे
नाशहोय अथवा थोडी लौंचीनी भक्षणकरनेसें अथवा
शीतलजलपीनेसें नाशहोय सुपारीका उन्माद जवहोता
है जव सुपारीकंठमें अटकजातीहै ॥५६॥

मू. एलार्द्रकाम्भोधरचंदनानांचूर्णंय
थापर्वविवर्द्धितानां प्रचर्मवक्त्रे
घ्नतमाशु हंति सुरा रसोनादिजमुग्र
गंधम् ॥५५॥

टी. इलायची. अदरक. नागरमोथा. चंदन. यहसव
वस्तुक्रमसें वढतीलेय. अर्थात् इलायची४भाग. अद
रक ३भाग. मोथा२भाग. चंदन१ भाग. इनसवकोकूटक
रमुखमें धारणकरणेसें मदिरा और लहसन इत्यादिक
सर्ववस्तुकी मुखदुर्गंध नाशहोय ॥५५॥

मू. गुडमधुकांजिकतक्रविभागाः स्यु
र्द्विगुणास्तु यथोत्तरमेते चिरिणादिना

न्यथधान्येमूलस्थापितमेतद्धि

तिद्विशुक्तम् ॥ ५६ ॥

टी· गुड़· महत· कांजी· छांछ· इनसबको कमसेहि गु·

णितलेय जैसे गुड़ सेदूना महत· महतसेंदूनी कांजी·

कांजीसेदूनी छांछ· इनसबको मिलाय एक पात्रमें भरके

धानकी राशमें धरदेय इसको शुक्त कहते हैं ॥ ५६ ॥

मू· शुक्तमुक्तमपियद्बहुभेदं हंतिसर्वमि

दमामजरोगं यन्मयार्णदितंमधुशु

क्तं तद्विपश्चिभिरलंपाचनमुक्तं ॥ ५७ ॥

टी· वैद्योंने शुक्त के अनेक भेद कहे हैं यहसब शुक्त आ

मके रोग नाशक हैं परंतु इसग्रंथमें जो मधुशुक्त कहाहै इ

सको वैद्य पाचक कहते हैं यहकार्यसाधने में महान है ॥ ५७ ॥

मू· सैंधवचित्रकटुधान्यजीरकैर्दाडिमी

रजनिरामठान्वितः पाचनोजठ

राग्निदीपनोवेशवारइतिदितोमनीषिभिः

टी· सैंधानोन· सोंठ मिरच· पीपर धनिया· जीरा· अनार

दाना· हरदी· और हींग· इनसबको कूटकर एकचूर्ण करनेसे

वेशवारनामका मसाला बनता है यह मसाला पाचन और

दीपन है ऐसे मैं बुद्धिमान वैद्य कहते हैं ॥ ५८ ॥

मू· विश्वौषधचपलोषणसैंधवधान्या

कहिंगुराजीभिः कारकाजाजियुता

भिर्गीदितोमुनिभिस्तुवेशवारोयम् ५९

टी॰ सोंठ॰ मिरच॰ पीपल॰ सैंधानोंन॰ धनियां॰ हींग॰ राई अनारदाना॰ अजमायन इनको मिलानेसेभी वेसवारले-यारहोताहै ॥५९॥

मू॰ अनेकऋषिवाक्येभ्युसारमादाय यत्नत: देविदासेन रचितासंक्षिप्ता॰ जीर्णमंजरी ॥६०॥

टी॰ अनेकऋषियोंकेवाक्योंकासारलेदेवीदासनेसं-क्षेपसेंअजीर्णमंजरीरचनाकरी ॥६०॥

अवघोड़ीअजीर्णवालाऔरभीअग्नि-भयकरि मंदाग्निपीड़ितमनुष्योंकेहितार्थेलिखतेहैं

अथविश्वभेषजचूर्ण॰

मू॰ विश्वभेषजंहिंगुटंकणंमागधीच सौवर्चलंत्विदं शिग्रुपादजैर्भा वितंरसै:अनलमाद्यनंसुत्सबोधनं ६१

टी॰ सोंठ॰ हींग॰ सुहागा॰ पीपल॰ सैंधानोन॰ इनसब कोसहजनेकेरसकीभावनादेकरअनुमानमाफिकभक्ष-णकरैतौमंदाग्निऔरमलकोनाशकरै ॥६१॥

हरीतक्यादिवटी

मू॰ हरीतकीहरिहरतुल्यषड्गुणाच तुरंगुणाचतुरविशालपिप्पली चि॰

चकं वरदवैरकमैं धवंरसापनंकुरु
नृपवटिवन्हिदीपनी ॥६२॥

टी॰ छोटीहरड़१भाग॰ पीपल गजपीपल ४भाग॰
चित्रक१भाग॰ सैंधानोन१भाग॰ इनसबको मिलायकर
करनीबूकेरसमैं गोलीबनावै यहरसापनहै सबरोगोंको
दूरकरताहै ॥६२॥

तक्रहरीतकी॥

मू॰ तक्रेसुसंस्वेद्यशिवाशतानितद्व
त्समुद्धृत्यचकोशलेन षडूषणं
पंचपटूनिहिंगुक्षारावजाजीस॰
जमोदकंच॥६३॥ षडूषणादेश्च
वृदर्धभागंगणोपदिष्टं पटगालि
तस्य विभाव्यचूर्णेशतजांश्यभीयां
क्षिपेच्छिवांवीजनिकास्यगर्भे॥६
४॥ समुत्थधर्मेषु विशोष्यतासांह
रीतकीमन्यतमांनियेवेत् स्वजी
र्णमंदानलजाठगमयान्समूल॰
शूलंग्रहणीगुदांकुरान॥६५॥वि
वंधमानाहरुजोजपत्यसौसध्याम
वातावसृताहरगनकी ॥६६॥

टी॰ बड़ीहरड़मोलेकरउनकोछांछमेंश्योटावैपीछेइनकी॰

गुठलीनिकालकरयेऔषधभरे·पीपर·पीपरामूल·चव्य·चित्रक·सोंठ·मिरचकाली·दालचीनी·सेंधानोंन·साम्भरनोन·कालानोंन·खारीनोंन·काचियानोन·हींग·जवाखार·सज्जीखार·जीरा·अजमोद·येप्रत्येक१तोलालेय औरनिसोतआधेतोलाइनसबकोकूटपीसवस्त्रमेंछानइस्मेंचूकाकीभावनादेकरपूर्वोक्तहरडोंमेंभरेपीछेइनहरडोंकोघाममेंसुखाइकरधररखेइसमेंसे१हरडखायतौइतनेरोगदूरहोयअजीर्ण·मंदाग्नि·उदरकेरोग·शूल·संग्रहणी·ववासीर·बंधकोष्ट·अफरा·औरआमवात·इनसबकानाशकरेइसकोअमृतहरीतकीकहतेहैं॥६६॥

वैश्वानरक्षार

म॰ स्नुह्यर्कचित्रकैरंडलवणांमपुनर्नवं
तिलापामार्गकदलीपलाशातिंतिणी
तथा॥६७॥ गृहीत्वाज्वालयेदेतत्प्र·
त्येकंभस्माखिलंचतत् जलाढकेवि
पक्तव्यंपावत्पादावशेषित:॥६८॥
सुप्रसन्नविनि:स्नावलवणाप्रस्थ
संयुतं पक्वंनिर्धूमकठिनमसक्ष्म
चूर्णीकृतंपुन:॥६९॥ यवानीजीर
कव्योषस्थूलजीरकहिंगुभि: पृथ·

गडूपत्रैरभिक्षारीनैस्तंविमिश्रयेत् ॥७०॥ आर्द्रकस्वरसेनापिभावयेच्छो षयेत्पुनः शीतोदकेनतच्चूर्णंपिबे त्प्रातर्हिमात्रया ॥७१॥ तस्मिन्नजीर्णे न्नमश्नीयाद्यावज्जीर्णमजीर्णरसैः इ्वेष दुष्णैः सलवणैः सुखोष्णैर्वह्निदीप ने ॥७२॥ तेनाग्निर्वर्द्धतबलमा रोग्यमेवच ॥ तच्चानुपानंपाकंहित कंवाभोजनेहितं ॥७३॥ मंदाग्न्यरो विकारेषुवातश्लेष्मामयेषुच सर्वां गशोथरोगेषुश्लेष्मगुल्मोदरेषुच ॥ ७४॥ आमार्शपथ्यकेरायांतुविशमूत्र निलरोगिषु ॥७५॥

टी· थूहर·आक·चीता·खंड·नोंन·सोंठ·तिल·औंगा· केला·ढाक·इमली·इनसबकीभस्मकर इनकीभस्म२५६ तोलेलेय पीछेइनको १०२४ तोलेजलमें औटावैजबचौथा हिसाबकीरहै तबउसकोउतारछानले पीछेइसमें६४तोले नोंनमिलाकरफेरऔटावै इसरीतसे निर्धूमकठोर ऐसा क्षारप्रगटहोयतबसक्षारकोलेकरघारीकपीसेपीछेइसमें· पश्चीपपश्चीरमिलावे· अजवायन·जीरा·सोंठ·मिरच· पीपर·बड़ाजीरा·हींग·येप्रत्येक२तोलेलेयइसकोमिलाय

इसमेंअदरककेरसकीभावनादेकरसुखायकरराखेहै इसमें
सेप्रातःकालबलकेमाफिकशीतलजलकेसाथभक्षणकरै
जबयहऔषधपचजायतब वनकेजीवोंकामांसकारस
तथापूर्वयोक्तरवहापदार्थजोनमिलनायकुछगरमकर·
औरअग्निदीप्तकरनेवालेपदार्थखानेकोदेयतौअग्निब·
लआरोग्यताइनकीवृद्धिहोय इसऔषधखानेकेपीछे
छाछपीवे अथवायहऔषधभोजनकेसमयदेनीउचित
है· मंदाग्नि·बवासीर·वात·कफ·सबदेहकीसूजन·भस·
गोला·उदरकेसमस्तरोग·इनकोअवश्यनाशनामरवाद्र
रकरताहै ॥७५॥

क्षारयोग

मू· हैक्षारौटंकणंसललवंगंलवणात्र
यं पिप्पलीगंधकंशुंठीमरिचंपल
संमितः ॥७६॥ कर्षमेकंविषंदत्वा
सूक्ष्मचूर्णानिकारयेत अर्कदुग्ध
स्यदातव्याभावनाःसप्तवासरं॥७७
अंधमूषागजपुटेस्वांगशीतंसमुद्ध
रेत तोलत्वंगमिरचंस्फटिकानां
पलेपलं ॥७८॥ सर्वसंमर्धसुदृढं·
दृढभांडेनिधापयेत सोयंगुंजाद्वि
यंखादेद्गुल्मंद्रावयतिक्षणात ॥७९॥

पुनर्भोजनवांछाचजनयेत्सुहृशोपरि आममांसंद्रावयतिश्लेष्मरोगनि कृंतनः॥८०॥

टी· सज्जीखार· जवाखार· सुहागा· पारा· लौंग· तीनों नोन· पीपल· गंधकआमलासारशुद्ध· सोंठ· मिरच· येप्र त्येकचार२तोलेलेय सिंगियाविष२तोलेइनसबकावारी कचूर्णकरइसमेंअदरककेरसकीसातभावनादेय पीछे इसकोगजपुटमेंधरकरफूंकदेयजबशीतलहोयतब· इ समेंलौंग· कालीमिरच· औरपिदकरीइनकेचार२तोलेचू र्णकरइसमेंमिलावे पीछेइसऔषधकोपात्रमेंभरकाधररा खे रोगीकोइसमेंसेदोरत्तीखानेकोदेयतोइसराभाजमेंभोज नकोपचापदेयऔरपहरभरमेंहीदूसरेभोजनकरनेकीइ च्छाकोकरेऔरआमवमांसकोद्रवकरदेयऔरकफके समस्तरोगोंकोदूरकरै॥८०॥

इतिक्षारयोग

म· भुक्तेपथ्याभुक्तेपथ्याभुक्ताभुक्तेपथ्या पथ्या जीर्णेपथ्याजीर्णेपथ्याजी· र्णाजीर्णेपथ्यापथ्या॥८१॥

टी· भोजनकरनेकेउपरांतहरड़पथ्यहैक्योंकिअन्नके पाचनकरनेसेंभोजनकेप्रथमभीहरड़पथ्यहैक्योंकिअ· ग्निकोदीप्तकरैहैऔरभुक्ताभुक्तकहियेभोजनकेउपरांत

वमनहोजायतउसमेंभीहरड़पथ्यहैक्योंकिवमनकेसब
दोषनाशकरताहैऔरअन्नजीर्णहोनेसेभीहरड़पथ्य
हैपक्काशयकोशोधनकरैहै अजीर्णमेंभीहरड़पथ्यहै
क्योंकिदीपनहोनेसेंतथा जीर्णाजीर्णकहियेकुछअन्न
पचाहोकुछनहींपचाहोउसकोभीहरड़पथ्यहैक्योंकि
विदग्धअन्नकोशीघ्रपाककरताहै ॥८१॥

कणाद्यचूर्ण

मू॰ कणासिंधुशिवावन्हिचूर्णमुष्णेन
वारिणा पीतंप्रातःक्षुधांकुर्य्यात्मा
वकस्यापिदीपनं ॥८२॥

टी॰ पीपल॰सेंधानोंन॰हरड़॰आमरे॰चित्रक॰इनका॰
चूर्णप्रातकालतत्तेजलसेंभक्षणकरैतोभूखकोबढ़ावै॰
औरजठराग्निकोदीप्तकरै ॥८२॥

जीरकादिचूर्ण

मू॰ जरणारुचकशुंठीपिप्पलीतीक्ष्ण
वेल्लं मल्लवराअजमोदाहिंगुपथ्ये
तिकर्षं पृथगथपलमात्रास्याद्वि
डचूर्णमेषाजननमुदरवन्हेःपाच
नंरोचनंच ॥८३॥

टी॰ जीरा॰संचरनोन॰सोंठ॰पीपर॰कालीमिरच॰वाय॰
विडंग॰सेंधानोंन॰अजमोद॰हींग॰हरड़॰इनसबऔषधी

कोतोले १ भरलेय सबका एककरचूर्णबनायलेय यहचूर्णउ
दरकी अग्निकोबढ़ावै पांचकास और रोगकहे ॥८३॥

हिंगाष्टकचूर्ण

मू· त्रिकटुकमजमोदासैंधवंजीरके द्वे
समधरणघृतानामष्टमोहिंगुभा
गः प्रथमकवलभुक्तंसर्पिषाचूर्ण
मेतज्जनयतिजठराग्निंवातगुल्मं
निहंति ॥८४॥

टी· सोंठ·मिरच·पीपल·अजमोद·सेंधानोन·दोनों·
जीरे·इनसबकोसमानभागलेकरचूर्णबनावे परंतुइसमें
हींगघृतमेंभूनकरमिलावै इसहिंगाष्टकचूर्णकोभोजन
केसमयप्रथमग्रासमेंघृतकेसाथमिलाकरखानेसेंअग्नि
कोबढ़ावे औरबायगोलाकोदूरकरै ॥८४॥

वह्निनामकरस

मू· जातीजातंत्रिकर्षंमरिचमपिपलं
चार्धकर्षप्रमाणं गंधंसूतंलवंगं
विषमिदमखिलंचिंचणीसस्यतो
ये पिष्ट्वामाषैकमात्रावितरतिदह
नेर्वह्निमांद्यंत्वसह्यो रोगानभल्ला
निलादीनदहतिकनगुणोवह्नि
नामारसोयं ॥८६॥

टी· जाविवी· तोला १॥ जायफल· तो· १॥ मिरचतो· ४ गं
धक·पारा·लोंग· सिंगियाविषप्रत्येकआधातोला इनस
बकोधारीकपीसकरइस्मेंइमलीकेरसकीभावनादेकरतर
दकेवराबरगोलीवनावैइस्मेंसेएकगोलीमनुष्यअनुपानकेसंगप्रा
तःकालअथवासायंकालखायतौमंदाग्निकानाशहोयवादीके
रोगमूलआदिकोनाशकरैइस्कोवह्निरसकहतेहैं॥

वृहच्छंखवटी

मू· स्नुगर्कचिंचायामार्गेरंभातिलपलाशजा
न क्षारांश्चभिषगोदद्यात्प्रत्येकंपलमात्र
या लवणानिपृथक्पंच शाल्याणिपल
मात्रया सर्जिकाचयवक्षारंटंकणांचि
तयंपलं सर्वद्रवयोदशपलंसूक्ष्मचूर्णं
विधापयेन तचसंखस्यशकलपलंवन्हौ
प्रताप्यतु वारान्निर्वापयेसप्तसर्वद्रवातित
घ्या नागरंत्रिफलंग्राह्यंमरीचंचपल
द्वयं पीप्पलीपलमात्रास्यात्पलार्धंभृष्टहिं
गुनः ग्रंथिकंचित्रकंचापियवानीजीरके
तथा जातीफलंलवंगंचपृथककर्षद्व
योन्मितं रसगंधौविषंचापिटंकणांचम
नःशिला रत्नानिकर्षमात्राणिसर्वसं
चूर्ण्यंभिषयेन भागवार्धेनचुक्रेणम

चीयवटिकाचैरन माषप्रमाणामात्रावैद्यै ·
वृहच्छंखवटीमुना सर्वजीर्णप्रशमनी
सबमलानवारणी विशुच्यलसका ·
दीनामयोभवनिनाशनी ॥

टी. यह ग्याक इमली ओंगा केला तिल टाक इन सबके खारोंको
चार२तोलेलेय साम्भरनोन कचियानोन कालानोन सेंधानोन समु
द्रनोन येचारतोलेलेय सज्जीखार जवाखार सुहागा यह सब४२तोले
लेय सबको कूटपीस चूर्ण६४तोले नींबूकेरसमेंभावनादेयपीछे४
तोलेशंखकेटुकडेलेयउनसबको आंचमेंतपायर के गोमूत्रमें बुझावेइसी
में७वारकरनेसे शंखकीभस्महोजायतब सोंठ१२तोलेमिरच४तोले
पीपर४तोले भुनीहींग२तोलेपीपरामूलचित्रकअजमायनलोंग
यह प्रत्येक दो२तोलेलेयपारागंधककीकजली विषसुहागायेभीमिल
येसब ओषध एक२तोलेलेयइनसबकोइकट्ठाकर१६तोले नींबूका
केरसमें मिलाकर गोलियांबनावेइसमेंसेएकमाशेनित्यखायतोअ
जीर्णशूलहैजाअत्यलसकश्वासकासनाशकरेइसकोवृहच्छंखवटीकहतेहैं

अग्निकुमाररस ॥

मू. पारदंशुद्धगंधंचविषंत्रितयंभिःसमं ·
कपर्दंविषतुल्यांशंटंकणंस्वर्जिका
कणा॥१शुंठीचाष्टगुणायुक्तामरिचंमे
लयेद्बुधः मर्दयित्वाम्लवेतसबापावत
साकज्जलप्रभा२जंबीरनीरैर्देयाचभाव

नामसन्नैवततः आर्द्रकस्यरसेनैववततः
सिद्धंद्विगुंजकं ३ रसश्चाग्निकुमारोयं
आमसंचयजाकजं अग्निमांद्यमजी
र्णंचनाशयेत्कफहृत्परः ॥४॥

टी॰ पारागंधकसिंगियाविषयहसववरावरलेकौडीकीभस्म२भाग लेयसज्जीखारसुहागापीपरएकभागलेयसोठ१भागलेयमिरच्चआठ भागइनकोखरलमेंवहुतसवारीककरनीवूकेरसकी७भावनादेयपीछेइ सेसें२रतीमनुष्यखायतौयहअग्निकुमाररसआमकेसमूहकोनाश करैमंदाग्निओरअजीर्णकोदूरकरैतथाकफकोहरैहै ॥४॥

अग्निदीपनीगोली॰

मू॰ गंधकंमरिचंशुंठीसैंधवंयवजंतवं ॥
नीवूरसेनवटिकाचणमात्राग्निदीपनी

टी॰ गंधककालीमिरचसोंठसेंधानोनइंद्रजौवाइविडंगइनको चूर्णकोनीवूकेरससेंचणावरावरगोलीवनावैइसगोलीकेखानेसें अग्निदीप्तहोय अजीर्णनाशहोय ॥

महोदधिगोली॥

मू॰ एकैकंनियमतंचजातिटंकद्विकंद्वि
कं कृष्णाचिकंविष्वपटकंदग्धस्या
त्सुकर्पार्द्धका देवपुष्पंवाणमितंमवं
संमर्द्यततः महोदधिवटीनाम॰
नष्टमग्निप्रयोजयेत ॥

टी॰ सुद्धसिंगियाविष१भाग॰पारा१भा॰जायफल१भा॰सुहागा१भा॰पीपल१भा॰सौंठ१भा॰कौडीकीभस्म६भाग॰लोंग५भा॰इनसबकै चूर्णकैइस्कोमहोदधियटीकहतेहैंयहअग्निकोबढातीहै॥

चित्रकादिचूर्णम्

मू॰ चित्रकोनागरंहिंगुपिप्पलीमूलपिप्पली चव्यआजमोदमरिचंप्रत्येकंकर्षसंमितं स्वर्जिकाचयवक्षारःसिंधुसौवर्चलंविडं सामुद्रिकंरोमकंचकोलमात्राणिकारयेत् एकीकृत्वाखिलंचूर्णंभावयेन्मातुलुंगजैः रसैर्वादाडिमैर्वापिशोषयेदातपेनवा तच्चूर्णं नाशयेद्गुल्मंग्रहणीमामजंरुजं अग्निंचकुरुतेदीप्तंरुचिष्ठंकफनाशनं॥

टी॰ चीता॰सौंठ॰हींग॰पीपरामूल॰चव्य॰अजमोद॰मिरच॰सबकर्ष१भरलेना दोनोंखार सेंधानोंन॰कालानोन॰समुद्रनोंन॰सांभरनोन॰कचियानोंन॰येकोल१लेय॰चूर्णकरबिजोराकेरसमेंभावनादेकरघाममेंसुखायलेय॰यहचूर्णगुल्म॰ग्रहणी॰आमरोग॰हरै अग्निदीप्तकरै रुचिकरै कफकोनाशकरै॥॰॥

इतिअजीर्णमंजरी समाप्त

हस्ताक्षरपण्डितकेशवदेवशर्माके॥

1538